ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
LIS

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 28, October-December, 2020
Page Nos. 37-40

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

बाजार का भूमण्डलीकरण - स्त्री एवं स्त्री लेखन के सन्दर्भ में

प्रिया सिंह*
डॉ0 देवेन्द्र नाथ सिंह**

शोध सारांश

भूमण्डलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो क्रमशः एवं चरणबद्ध तरीके से वैश्विक समुदाय को एकीकृत करने का प्रयास करती है। मुक्त व्यापार, पूंजीवाद और लोकतंत्र के विचार व्यापक रूप से भूमण्डलीकरण को बढ़ावा देते है तो मीडिया, बाजार तथा सूचना तंत्र भूमण्डलीकरण के कारक तत्व है। यह भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, साहित्य, संस्कृति इत्यादि सभी हिस्सों को प्रभावित करता है कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक रूप में। भूमण्डलीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव दोनों ही स्त्रियों व महिला लेखिकाओं के लिए उपयोगी साबित हुए हैं जहां सकारात्मक पक्ष ने नारी मुक्ति आन्दोलन को बल दिया उसे शिक्षा एवं रोजगार के अवसर दिए, आर्थिक स्वावलम्बन दिया वहीं इसके नकारात्मक प्रभावों को उजागर करते हुए महिला लेखन पाठक वर्ग के समीप आने के साथ ही साथ और अधिक परिपक्व होता जाता है। लेखिकाओं को स्त्री से हटकर अन्य प्रभावशाली मुद्दों पर अपनी लेखनी चलाने के लिए विषय भी उपलब्ध कराता है।

Keywords : भूमण्डलीकरण, मीडिया, बाजार, उत्तर आधुनिकता, महिला लेखन

भूमण्डलीकरण एक प्रक्रिया है, जो क्रमशः एवं चरणबद्ध तरीके से वैश्विक समुदाय को एकीकृत करने का प्रयास करती है। यह प्रक्रिया उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता। आधुनिक समय में यह संकल्पना 1960 के दशक से चर्चा में आई तथा कैनेडियाई साहित्य के आलोचक मार्शल लोहान ने 'वैश्विक ग्राम' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किया। तकनीक के बढ़ने के साथ ही यह प्रक्रिया और अधिक तीव्र होती गई किन्तु शीतयुद्ध के समय यह रफ्तार मंद रही। 1991 में सोवियत संघ के विघटन तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने के साथ ही यह प्रक्रिया फिर तीव्र हो गई तथा भारत भी इस वैश्विक ग्राम का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया। इस प्रकार भूमण्डलीकरण का शाब्दिक अर्थ है स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया जिसमें सम्पूर्ण विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन ही है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थायें जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक एवं विश्व व्यापार संगठन की स्थापना इस प्रक्रिया में सहयोग देने वाले अन्य कारक हैं। टॉम जी0 पामर इसे परिभाषित करते हुए लिखते हैं– "सीमाओं के पार विनिमय पर राज्य प्रतिबंधों का ह्रास या विलोपन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ उत्पादन और विनिमय का तीव्र एकीकृत और जटिल विश्व स्तरीय तंत्र।" वहीं थामस एल0 फ्राइडमैन के अनुसार, "यह दुनिया के सपाट होने के प्रभाव की जाँच करता है।"

मुक्त व्यापार, पूँजीवाद और लोकतंत्र के विचार व्यापक रूप से भूमण्डलीकरण को बढ़ावा देते हैं तो मीडिया, बाजार तथा सूचना तंत्र भूमण्डलीकरण के कारक तत्व हैं। बाजार भूमण्डलीकरण के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण युक्ति है। बाजार की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण हो गई है कि संसार एक वैश्विक गाँव के बजाय एक वैश्विक बाजार के रूप में ज्यादा परिवर्तित हो रहा है, जिसमें सूचना तंत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सुधीश पचौरी इस सम्बन्ध में लिखते हैं– "भूमण्डलीकरण का सबसे बड़ा औजार विश्व बाजार तो है ही सैटेलाइट क्रांति और उससे जुड़ी सूचना क्रांति इस विश्व बाजार के सारथी हैं। जिन अंतरिक्ष यानों को कुछ दशक पहले चन्द्रमा पर उतरता देख धरती के मनुष्य खुश हुए और उन्होंने उसमें मानव की प्रकृति पर विजय देखी तभी से भूमण्डलीकरण का एक ध्वजवाहक सैटेलाइट पैदा हो गया था जो धरती के चारो ओर परिक्रमा कर संकेत भेज सकता था।" मीडिया तथा विज्ञापन ने उपभोग और उत्पादन की क्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। वर्तमान उपभोक्तावादी समय में बाजार के प्रसार की आकांक्षा, उन्मुक्त आकर्षण, स्त्रीछवि का कामुक प्रयोग वर्तमान विज्ञान की विशेषताएँ बन गई हैं। लोगों की मनोवृत्ति बदलने में मीडिया व विज्ञापनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, मीडिया

*शोध छात्रा (हिन्दी विभाग) डॉ0 शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ
**शोध पर्यवेक्षक – पूर्व प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) डॉ0 शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

का ही सहारा पाकर निरंतर बाजार का विस्तार हो रहा है। मिथिलेश्वर के अनुसार– "बाजार की शक्ति और स्रोत के संचालन का माध्यम तत्कालीन मीडिया है। बाजार ने लगभग मीडिया पर अपना आधिपत्य जमा लिया है। हमारे जीवन और घर परिवार में हमारी आवश्यकताओं के नाम पर लगातार दो चीजें परोसी जा रही हैं, जाने–अनजाने हम उनकी दासता के शिकार होते जा रहे हैं..... हमारी मर्जी और प्राथमिकता अपने हिसाब से अब वे तय करने लगे हैं।"

उत्पादन एवं अधिक उत्पादन ही आर्थिक भूमण्डलीकरण का उद्देश्य है। अत्यधिक उत्पादन के लिए निगमों को स्वतंत्र बाजार की सुविधा उपलब्ध कराना राष्ट्रीय सरोकारों का प्रमुख काम रहा है। इसके लिए निगमों की गतिविधियों में अड़चन पैदा करने वाले कानूनों जैसे– पर्यावरण सम्बन्धी कानून, सरकारी स्वास्थ्य सेवा कानून, खाद्य सुरक्षा कानून तथा श्रमिकों के अधिकार सम्बन्धित कानूनों में या तो सुधार किया गया या उन्हें खारिज करना पड़ा। इसकी एक अन्य विशेषता है सार्वजनिक सेवाओं के क्षेत्र का भी निजीकरण। जिन सरकारी सुविधाओं को पाने का अधिकार एक आम नागरिक रखता था, वह स्थानांतरित होकर बेहतर सेवा के नाम पर निगमों के हाथों में केन्द्रित होती जा रही है। जीवन के हर कोने तथा अस्तित्व के हर रूप का वस्तुकरण होता जा रहा है। जो प्राकृतिक संसाधन गरीब से गरीब व्यक्ति को उपलब्ध थे जैसे– खुली हवा, नदी, झरने व सरोवर का पानी, बीज आदि प्राकृतिक सम्पदा का भूमण्डलीकरण के नाम पर निजीकरण हो रहा है, बाजार में उसकी कीमत निर्धारित की जाती है तथा दुनिया के बाजार में उसकी खरीद–बिक्री होती है। भूमण्डलीकरण की एक और विशेषता है, निर्यात केन्द्रित उत्पादन। इसके अनुसार प्रत्येक देश को वही उत्पादन करना चाहिए जिसमें वह सबसे अधिक सक्षम हो। अब तक यह आदान–प्रदान राष्ट्रीय स्तर पर चलता था अब वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है।

भारत के संदर्भ में देखें तो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार द्वारा मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति को चुना गया। कई बड़े उद्योग स्थापित कर निजी क्षेत्र को विकसित होने दिया तथा लम्बे समय तक निर्धारित लक्ष्य प्राप्त न कर पाने के कारण कल्याणकारी कार्यों के लिए भारत ने अन्य देशों से ऋण लिया। 1991 में भारत की स्थिति कुछ ऐसी बनी की उसने ऋण लेने की विश्वसनीयता खो दी। सरकारी खर्च आय से कहीं अधिक हो गया। धीमा विकास, पूंजी की कमी तथा प्रौद्योगिकी के पिछड़ेपन के कारण भारत भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया तेज करने तथा विश्व बैंक एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्तों को अपनाकर अपने बाजार अन्यों के लिए खोलने को विवश हो गया। सरकार की इस नीति को नई आर्थिक नीति कहा गया। जिसके चलते सरकारी क्षेत्र द्वारा की जाने वाली गतिविधियों को निजी क्षेत्र के लिए भी खोल दिया गया, निजी क्षेत्रों को प्रतिबंधों से मुक्त करके नए उद्योग प्रारम्भ करने की कई रियायतें भी दी गईं। बाहरी व्यापारियों तथा उद्योगपतियों को अपना माल और सेवाएँ भारत में बेचने के लिए आमंत्रित किया गया तथा साथ ही वे विदेशी वस्तुएँ जिन्हें पहले भारत में बेचने की अनुमति प्राप्त नहीं थी अब वे वस्तुएँ भारत में बेंची जा रही थीं। भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत भारत में विदेशी कम्पनियों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक्स, मोटर गाड़ियों, सूचना प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में उत्पादन की अनेक इकाइयाँ लगाई गईं जिसके चलते कई उपभोक्ता वस्तुओं जैसे– टेलीविजन, रेडियो आदि घरेलू उपकरणों की कीमतें घटीं। दूरसंचार क्षेत्र ने भी असाधारण प्रगति की। पहले जहाँ हम एक–दो चैनल ही देख पाते थे वहाँ आज अनेकों चैनल देख पाते हैं। मोबाइल फोन की पहुँच प्रत्येक व्यक्ति तक है तथा कम्प्यूटर एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग भी बढ़ा है।

भूमण्डलीकरण अपनी तमाम अच्छाईयों और बुराइयों के साथ हमारे सामने आता है। यह भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, साहित्य, संस्कृति इत्यादि सभी हिस्सों को प्रभावित करता है कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक रूप में महिलाओं को केन्द्र में रखकर देखें तो, इनकी स्थिति को सुधारने में भूमण्डलीकरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका सामने आती है। इसने महिलाओं को रोजगार और आर्थिक सुरक्षा तो प्रदान की ही शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुकूल परिस्थितियों को जन्म दिया। पश्चिम से सम्पर्क में आने पर नारीवादी आंदोलन को अधिक बल मिला जिसने स्त्री मुक्ति के सभी प्रश्नों को जोरदार तरीके से उठाया। साहित्य के क्षेत्र में भी महिलाओं की संख्या एवं स्थिति में बढ़ोत्तरी हुई। नारीवादी आंदोलन के कारण ही स्त्रियों की सामाजिक भूमिका में बदलाव आते हैं, उनकी राजनीतिक भागीदारी में भी बढ़ोत्तरी होती है, स्त्रियाँ समान कानूनी और राजनीतिक अधिकारों के साथ न केवल बेहतर शिक्षा की माँ करती हैं बल्कि पुरुषों के बराबर जिम्मेदारी उठाने को भी तत्पर होती हैं। उत्तर आधुनिकता व बाजार के भूमण्डलीकरण ने जिस तरह की पृष्ठभूमि तैयार की उससे विश्व मंच पर स्त्री मुक्ति का संग्राम एक नया रूप ले चुका था तथा जो मुद्दे उठाए जा रहे थे उससे सारी दुनिया की स्त्रियाँ सहमत थीं। समाज को केन्द्रीय आधार परिवार रहा है और यह आंदोलन परिवार के क्षेत्र में स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों के संदर्भ में भी बुनियादी सवालों को उठाता है। हालांकि यह मुद्दे पहले पश्चिमी देशों में उठे किन्तु दुनिया की अधिकतम स्त्रियाँ इससे प्रभावित हुईं और इसने उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन और आचरण को अमूल रूप में प्रभावित भी किया। ये सारे परिवर्तन तथा प्रभाव तत्कालीन साहित्य में भी विशेष रूप से परिलक्षित होते हैं मुख्यतः उपन्यास साहित्य में। स्त्री विषयक विश्व साहित्य जब अनुदित होकर हिन्दी में आया तो इसने हिन्दी लेखन पर अपना व्यापक प्रभाव छोड़ा यही कारण है

कि महिला लेखिकाओं की एक लम्बी फौज अपने हाथों में कलम लेकर अपने अस्तित्व व अपने अधिकारों के लिए लड़ती दिखाई देती है।

भूमण्डलीकरण के सकारात्मक पक्षों की ही भाँति इसके नकारात्मक प्रभाव भी कम नहीं हैं। भूमण्डलीकरण के कारण यदि विश्व बाजार बना है तो विश्व मजदूर भी पैदा हुआ है। तकनीकी क्रांति ने उत्पादन के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन तो किया ही है, किन्तु साथ ही मनुष्य का शोषण एवं उत्पीड़न भी बढ़ाया है। जहाँ विश्व बाजार बढ़ा है वहीं सूचना और तकनीक द्वारा प्रकृति व मनुष्य को नियंत्रित कर अपने लिए सवाल भी खड़े किए हैं। ऐसा माना जाता है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने लचीली श्रम व्यवस्था को लागू किया जिसके कारण स्त्रियों को ज्यादा रोजगार मिलने लगा, किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। अमेरिकी निगमों द्वारा श्रम के एक नए स्रोत के रूप में स्त्रियों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। श्रम बाजार में स्त्रियों की माँग बढ़ने का एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि समाज में दोयम दर्जे की स्थिति के कारण सदैव से ही महिलाओं के योगदान को पुरुष की आय के सहायक के रूप में देखा गया है, पिछड़े देशों में ही नहीं बल्कि विकसित देशों में भी महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम वेतन दिया जाता है। "मालिक वर्ग का कहना है कि स्त्रियाँ और विशेषकर अविकसित स्त्रियाँ ज्यादा सक्षम मजदूर साबित होती हैं– विशेषकर निर्माता उद्योग के संदर्भ में जो आँकड़े मिलते हैं। उससे यही सिद्ध होता है कि वस्त्र उद्योग, चर्म उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक, आभूषण, समुद्री उत्पाद आदि में 70 प्रतिशत की संख्या में स्त्रियाँ हैं जिनकी उम्र 21 से 30 वर्ष की है। 1990 के दशक में नियुक्त की गईं, जिनमें 11 प्रतिशत स्त्रियाँ 15 से 20 वर्ष की उम्र में थीं और 10 प्रतिशत 31 से 40 वर्ष की।" स्त्री श्रमिकों को प्राथमिकता देने के प्रमुख कारण रहे हैं– उनका कम लागत पर उपलब्ध होना, उनका गैर संगठित होना तथा अविवाहित स्त्रियों पर मातृत्व अवकाश या सुविधा का कोई भी व्यय नहीं आता। पूंजीवाद ने स्त्रियों को चूल्हे–चौकों की गुलामी से आंशिक मुक्ति तो अवश्य दिलाई किन्तु साथ ही उन्हें दोयम दर्जे की नागरिकता देने के साथ ही निकृष्टतम कोटि की उजरती गुलाम बनाकर सड़कों पर धकेल दिया। बाजार–उपनिवेशवाद के दौर में पितृसत्तात्मक पारिवारिक ढाँचे की स्वेच्छाचारिता, कूपमण्डूक रागात्मकता एवं पार्थक्य का स्थान पूंजीवादी पारिवारिक ढाँचे की निरंकुशता, नग्न यौन–उत्पीड़न, उपभोक्ता संस्कृति एवं बेगानेपन ने ले लिया है। वर्तमान समय में रहते हुए हम बाजार की सत्ता से इंकार नहीं कर सकते क्योंकि समय के साथ–साथ इसकी चमक भी बढ़ती जा रही है तथा इस विश्व बाजार ने स्वाभाविक और सामान्य को हाशिए पर धकेल दिया है। इसने मानवीय मूल्यों को ताक पर फेंक दिया है। केदारनाथ सिंह के अनुसार– "लगभग छः सौ साल पहले कबीर ने इस दुनिया को एक हाट कहा था 'पूरा किया बिसाहुणा, बहुरि न आवौ हट्ट' आज कबीर की वाणी सौ प्रतिशत सच लग रही है, जब हम समाज और सम्बन्धों को बाजार में तब्दील होते देख रहे हैं।" बढ़ते बाजारीकरण ने शिक्षा व संस्कृति को भी बड़े स्तर पर प्रभावित किया है, आजकल शिक्षा दी नहीं जाती बल्कि बेची जाती है। शिक्षा के निजीकरण ने इसकी गुणवत्ता व लोगों की पहुँच पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। साथ ही समाज के खान–पान, वेश–भूषा, साहित्य, कला, संगीत इत्यादि पर भी बाजार का हमला हो रहा है। समकालीन दौर में प्रत्येक व्यक्ति मीडिया का प्रयोग अपनी मर्जी से कर रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ मीडिया को अपने फायदे का माध्यम बनाकर कारोबार में वृद्धि कर रही हैं। ये कंपनियाँ मीडिया द्वारा अपनी वस्तुओं और उत्पादों को बेचने के लिए अधिक से अधिक पैसा खर्च करती हैं तथा लोग वही वस्तुएँ खरीदते हैं जिनका प्रचार–प्रसार अधिक होता है। कुमुद शर्मा के अनुसार– "बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में मनुष्य को नागरिक नहीं, अपने व्यापारिक हितों को सर्वोपरि माना है।..... विज्ञापन के जादू से ही अपने उत्पाद के हक में उपभोक्ता के मनोविज्ञान को बदलने में सक्षम सिद्ध हुई है।"

भूमण्डलीकरण की अवधारणा प्रत्येक क्षेत्र में खुलेपन को महत्त्व देती है तथा नैतिकता एवं अनैतिकता सम्बन्धी मान्यताओं को विशेष महत्त्व नहीं देती। यह समाज में स्त्री की एक नई छवि पेश करता है जो उपभोक्ता के रूप में है। जहाँ भूमण्डलीकरण ने एक तरफ स्त्रियों को मुक्ति की राह दिखाई वहीं दूसरी ओर उपभोक्तावादी संस्कृति ने स्त्रियों के मार्ग को बाधित किया है। "भूमण्डलीकरण ने नारी मुक्ति से आगे बढ़कर स्त्री–पुरुष समीकरण को एक नया मोड़ दिया है। यद्यपि पूँजीवादी संस्कृति में महिलाएँ घर से बाहर निकली हैं किन्तु नारी मुक्ति का मार्ग गुम हो गया है। इस नए वाद ने नारी को पॉवर वूमन के छद्म आवरण में ढांक दिया है और उसकी देह का शोषण किया है।" समकालीन स्त्री लेखन व्यापक मानवीय दृष्टि का परिचय देता हुआ अपनी लेखन के माध्यम से समय और समाज का विश्लेषण कर रहा है। भूमण्डलीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण के जबरदस्त तनाव की परिणति समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में देखी जा सकती है। ममता कालिया का उपन्यास 'दौड़' बाजारीकरण के युग में पारिवारिक सम्बन्धों के बदलते समीकरण की कहानी है। इसमें लेखिका ने उसी अंधी दौड़ का वर्णन किया है जिसमें युवा बाजार के वशीभूत होकर आत्मिक रिश्तों को भूलते जा रहे हैं। लेखिका के अनुसार– "जिन युवाओं–प्रतिभाओं ने यह कमान संभाली है उन्होंने कार्यक्षेत्र में तो खुब कामयाबी पाई है, पर मानवीय सम्बन्धों के समीकरण उनसे कहीं ज्यादा खिंच गए हैं, तो कहीं ढीले पड़ गए हैं।"

बाजार के प्रसार के साथ स्त्री की स्थिति में भी गिरावट आई है। समकालीन दौर में अपने अधिकारों को समझते हुए भी

वह वस्तु से बढ़कर कुछ भी नहीं है। बाजार ने स्त्री को सुंदरता का प्रलोभन देकर वस्तु में तब्दील कर दिया है। 'आंवा' उपन्यास में चित्रा मुद्गल नमिता के माध्यम से बाजारवाद के अवमूल्यन से परिचित कराती है जिसमें स्त्री बाजार की शक्ति के हाथों बिक रही है। उपन्यास में सिद्धार्थ कहता है– "देखो पोर्टफोलियो मैं तुम्हारा तैयार करवा दूँगा। फीस की शक्ल भर बदल जायेगी..... पोर्टफोलियो बनाने की एवज में तुम्हें मेरे साथ दैहिक सम्बन्ध रखने होंगे।" मीडिया जो प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम है, वास्तव में वास्तविक मुद्दों से हटकर अन्य मुद्दों की ओर भटक रहा है जैसे– फिल्मी हस्तियाँ, ग्रह नक्षत्र, रियलिटी शो आदि। समकालीन दौर में यह अंधविश्वासों को तो परोसता ही है साथ ही विज्ञापन के जरिए समाज की मानसिकता को भी चेतनाशून्य बना रहा है। यह ग्लैमर के सहारे अनावश्यक वस्तुओं के प्रति लालसा पैदा करता है तथा उनका प्रचार इस तरह करता है कि वे वस्तुएँ हमारी जरूरत बन जाती हैं।

अलका सरावगी अपने उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' में इसी समस्या पर प्रकाश डालती है कि जिन वस्तुओं का विज्ञापन द्वारा प्रचार–प्रसार नहीं होता, लोग उसे खरीदने से भी परहेज करते हैं। के0वी0 के पूछने पर कि जिस कम्पनी का दूध खरीदती हो इसके अलावा दूसरी कंपनी का भी खरीद सकती हो, तो उसकी पत्नी कहती है– "हाँ अगर उस कंपनी का न मिले.....ऐसी कंपनी का जिसका नाम टी0वी0 पर कभी सुना हो या मैगजीन वगैरह में देखा हो।" विज्ञापन तथा ग्लैमर का जितना प्रभाव स्त्रियों पर पड़ा उतना ही गरीब वर्ग, युवा वर्ग तथा बच्चों पर भी पड़ा है।

इस सम्बन्ध में प्रभा खेतान कहती हैं– "जिन बड़े–बड़े विज्ञापनों द्वारा गरीब वर्ग के बच्चों को लुभाया जाता है, इस प्रकार से गरीब के घर यह डकैती है इनका सर्वस्व छीन लिया गया है। गरीब का बच्चा साधारण जींस नहीं पहनना चाहता बल्कि लिवाइस की जींस पहनना चाहता है। वह साधारण जूता नहीं पहनना चाहता बल्कि नाईक के जूते के लिए चोरी–डकैती तक करने को तैयार है।" इस प्रकार महिला लेखिकाओं ने मीडिया एवं विज्ञापनों जैसे विषयों के नकारात्मक पहलुओं को खुलकर समाज के सामने प्रस्तुत किया है। समकालीन समाज जिसने अब उपभोक्ता समाज का रूप धारण कर लिया है तथा मीडिया व विज्ञापन ने मनुष्य के विवेक को हर लिया है जिस कारण उसकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और विलासिताओं में कोई अन्तर नहीं रह गया, ऐसी स्थिति में महिला उपन्यास लेखिकाएँ जरूरत और लालसा के अन्तर की बारीकियों को समझाते हुए पाठक वर्ग के सामने प्रस्तुत करती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भूमण्डलीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव दोनों ही स्त्रियों व महिला लेखिकाओं के लिए उपयोगी साबित हुए हैं जहाँ इसके सकारात्मक पक्ष ने नारी मुक्ति आंदोलन को बल दिया, उसे शिक्षा एवं रोजगार के अवसर दिए, आर्थिक स्वावलम्बन दिया वहीं इसके नकारात्मक प्रभावों को उजागर करते हुए महिला लेखन पाठक वर्ग के समीप आने के साथ ही साथ और अधिक परिपक्व होता जाता है। लेखिकाओं को स्त्री से हटकर अन्य प्रभावशाली मुद्दों पर अपनी लेखनी चलाने के लिए विषय भी उपलब्ध कराता है।

सन्दर्भ :–

1. टॉम जी0 पामर : वैश्वीकरण महान है (वक्तव्य)
2. फ्राइडमैन, थॉमस एल0 : संघर्ष को रोकने का डेल सिद्धान्त, पृ0 41
3. सुधीश पचौरी : भूमण्डलीकरण के लिए नया शास्त्र चाहिए (लेख), परिवेश, अप्रैल 1996, पृ0 128
4. मिथिलेश्वर : बाजार से लड़ने के लिए बाजार जरूरी है, वागार्थ (पत्रिका), मई 2006, पृ0 61
5. प्रभा खेतान : बाजार के बीच–बाजार के खिलाफ, पृ0 69
6. मनीषा झा : यह बाजारों का समय है, केदार सिंह, आलोचना (पत्रिका), अंक 33, पृ0 29
7. कुमुद शर्मा : भूमण्डलीकरण और मीडिया, पृ0 29
8. मनीष कुमार : महिला सशक्तिकरण दशा और दिशा, पृ0 54
9. ममता कालिया : दौड़, पृ0 4–5
10. चित्रा मुद्गल : आवां, पृ0 234
11. अलका सरावगी : एक ब्रेक के बाद, पृ0 81
12. प्रभा खेतान : प्रतिरोध, समयांतर (पत्रिका), जून 2006, अंक 9, पृ0 12

❐❐❐